आकलन और सशक्तीकरण

इन्दिरा विजयसिम्हा



आकलन के विषय पर विचार करते हुए मुझे मेरी दादी द्वारा सुनाई गई रामायण की एक कहानी की याद आ गई। चूँकि मैं इस कहानी को अपनी स्मृति से याद कर रही हूँ, इसलिए मैं रामायण के विद्वानों से शुरू में ही माफी माँगना चाहती हूँ क्योंकि कहानी जिस तरह से मुझे याद है, हो सकता है कि वह साहित्य के साथ मेल न खाती हो। बिना कोई और अप्रासांगिक बात किए मैं पहले आपको वह कहानी सुना दूँ और फिर यह बताऊँगी कि वह शैक्षणिक आकलन के सन्दर्भ में क्यों प्रासंगिक लगती है।

अपहृत रानी सीता की खोज में वानरों का एक समूह दक्षिणी समुद्र तट पर पहुँचा। समुद्र के उस पार श्रीलंका था और सीता को खोजने के लिए समुद्र को पार करना जरूरी था। पानी के विराट विस्तार को एकटक देखते रहने के बाद, वानरों ने पानी को छलांग लगाकर पार करने की सम्भावना पर विचार किया। वानर समूह के सदस्यों ने इस कार्य को हाथ में लेने के अपने सामर्थ्य का आकलन करना शुरू किया। उनमें से कुछ ने कहा कि वे चौथाई दूरी लांघकर पार सकते हैं, कुछ ने कहा कि वे आधी दूरी छलांग लगाकर पार कर सकते हैं। तब वानरों का युवराज अंगद सामने आया और उसने वीरतापूर्वक घोषणा कि वह पूरा समुद्र पार कर जाएगा, पर उसके पास वापस आने की शक्ति नहीं रह जाएगी। जब वानर इस सोच में पड़े थे कि उनका अगला कदम क्या हो, तब उनके बुद्धिमान वृद्ध सलाहकार जाम्बवन्त ने हनुमान से बात की और उनसे कहा कि अकेले उनमें यह क्षमता है कि वे समुद्र को लांघकर सीता की खबर के साथ वापस भी आ सकते हैं। हनुमान ने इस कार्य को बखूबी अंजाम दिया और बहुत सी अन्य घटनाएँ घटित हुईं और तब जाकर सीता को वापस लाया गया।

मेरे लिए, रामायण के महाकाव्य की यह उपकथा इस बात का उदाहरण है कि किस तरह आकलन का बुद्धिमत्तापूर्ण उपयोग बच्चों के सशक्तीकरण का उपकरण बन सकता है। सब वानर व्यक्तिगत रूप से अपनी-अपनी क्षमताओं के आत्म-आकलन में गम्भीरता से जुटे थे और साधारणतः वे अपने दावों में यथार्थ के करीब ही थे क्योंकि उनके दावों को जाम्बवन्त ने चुनौती नहीं दी। लेकिन हनुमान (जो चुपचाप खड़े थे और अपनी क्षमताओं को लेकर अनिश्चित थे) के मामले में जाम्बवन्त उनकी क्षमताओं का सही आकलन करने की स्थिति में थे और इस प्रकार उन्होंने हनुमान को समुद्र पार करने के विराट चुनौती भरे कार्य के लिए शक्ति दी। काश कि जाम्बवन्त का अनुसरण करते हुए कक्षाओं में शिक्षकों के रूप में हमसे भी आकलन को सिर्फ बच्चों के सशक्तीकरण के उपकरण के रूप में इस्तेमाल करने की अपेक्षा की जाए।

लेकिन, हममें से अधिकांश शिक्षक आकलन का प्रयोग बिना सोचे-समझे करते हैं क्योंकि वह शिक्षण का एक स्वाभाविक अपरिहार्य अंग बन गया है। अक्सर ही आकलनों का इस्तेमाल विद्यार्थियों का मूल्यांकन करने के लिए और उन्हें किन्हीं दिए गए अध्ययन-क्षेत्रों या किन्हीं खास योग्यताओं में ज्यादा सक्षम या कम सक्षम जैसी श्रेणियों या प्रकारों में बाँटने के लिए किया जाता है। आम बोलचाल में आकलन और मूल्यांकन को पर्यायवाचियों के रूप में इस्तेमाल किया जाता है जो शिक्षकों के रूप में हमारी उस आम प्रवृत्ति को दर्शाता है जिसके तहत हम विद्यार्थियों को श्रेणियों में बाँटकर उन पर ठप्पे लगा देते हैं। कई मौकों पर बड़ी व्यवस्था में शिक्षक को यह करना जरूरी होता है और अन्य भागीदारों – पालकों, स्कूल बोर्डों, नियोक्ताओं – को यह स्पष्ट रूप से बताना होता है कि विद्यार्थियों द्वारा किस

स्तर तक कोई वांछित ज्ञान या योग्यता अर्जित कर ली गई है। शिक्षकों द्वारा नियमित रूप से आकलन और मूल्यांकन के विभिन्न उपकरणों का प्रयोग किया जाता है। यद्यपि उन्हें विशिष्ट क्षेत्रों में प्रदर्शन को जाँचने के लिए रचा जाता है पर इन प्रदर्शनों की रिपोर्टों में अन्य अर्थों के संकेत भी होते हैं।

विद्यार्थी खुद भी अपने प्रदर्शन के उस आकलन के जरूरत से कहीं ज्यादा अर्थ निकाल लेते हैं, जिसे आमतौर पर अंकों या ग्रेड्स के रूप में दर्शाया जाता है। वे खुद इस तरह की बातें कहते हैं, "मैं गणित में अच्छा नहीं हूँ!" बजाय यह कहने के कि, "मुझे शायद चक्रवृद्धि ब्याज का हिसाब करना नहीं आया" या, यह कहते हैं कि, "मैं अँग्रेजी में सबसे अच्छा हूँ" बजाय इसके कि, "मैं अपने निबन्ध को किस तरह इतना रोचक बना दूँ कि मेरे सहपाठी उसे पढ़ना चाहें", या यह कहते हैं कि, "मैं विज्ञान के इस टॉपिक के बारे में सब कुछ जानता हूँ" बजाय यह कहने के कि, "यह तो काफी रोचक है! क्या यह इसी तरह से.......में भी काम करेगा।" अपने टैस्ट/परीक्षाओं में मिले ग्रेड्स से जो मोटे व्यापक निष्कर्ष वे निकालते हैं, वे आमतौर पर किसी एक दिशा में पर्याप्त रूप से केन्द्रित या सुनिश्चित नहीं होते ताकि वे अपने सीखने में सुधार करने के लिए या वांछित दिशाओं में अपनी क्षमताओं को निखारने के लिए उचित कदम उठा सकें। आश्चर्यजनक रूप से टैस्ट के प्रदर्शनों को लेकर अक्सर शिक्षक भी विद्यार्थियों के बारे में इसी तरह के निष्कर्षों पर पहुँचते हैं। इसके चलते विद्यार्थियों पर ऐसे दृष्टिकोणों के अनुसार उच्चतर या कमतर उपलब्धियों वाले विद्यार्थियों का ठप्पा लगा दिया जाता है, जिनकी वास्तव में कोई वस्तुनिष्ठ बुनियाद नहीं होती।

शोध से ऐसे पर्याप्त प्रमाण मिले हैं जिनसे यह संकेत मिलता है कि विद्यार्थियों का आकलन करने के लिए शब्दों या अंकों पर आधारित ग्रेड्स पर जोर देना प्रतिकूल नतीजे देता है। पहले तो, शोध से यह संकेत मिलता है कि "ग्रेड पर ध्यान देने वाले" और "सीखने पर ध्यान देने वाले" रवैये आमतौर पर बिलकुल विपरीत दिशाओं में खींचते हैं और विद्यार्थी अन्त में सच्चे ढंग से सीखने के बजाय ऊँचे ग्रेड्स पाने के चक्कर में बहुत आसान रास्ते अपना सकते हैं। दूसरे, आमतौर पर ग्रेड्स विद्यार्थियों के चुनौतीपूर्ण कार्य करने के रुझान को कमजोर कर देते हैं और तीसरे, ग्रेड्स सृजनात्मकता को घटा देते हैं।

ग्रेड्स के साथ और भी समस्याएँ हैं - यहाँ ये कक्षा में अध्यापन के दौरान शिक्षकों द्वारा बच्चों को दिए गए ग्रेड्स की विश्वसनीयता और वैधता के सन्दर्भ में हैं। मुझे पूरे समय इस बात की चिन्ता रहती है कि मैं विद्यार्थी को ग्रेड देने का काम पूरी निष्पक्षता से करूँ। मैं ग्रेड्स देने के लिए "वस्तुपरक" कसौटियों को खोजने में भले ही कितना भी समय बिताऊँ, अन्ततः बात विद्यार्थी के उत्तरों को लेकर मेरी विवेचना और व्यक्तिपरक प्रतिक्रिया पर निर्भर करती है। दूसरी तरफ एक बेहद वस्तुनिष्ठ ढंग का प्रश्नपत्र मुझे एक शिक्षक के रूप में विभिन्न विचारों पर की गई विद्यार्थियों की मेहनत और समझ को तथा मुझे अपने दृष्टिकोणों के बारे में मनाने की उनकी क्षमता की गहराई और गुणवत्ता को मापने का मौका नहीं देता। बुद्धिमान जाम्बवन्त के विपरीत, मैं कभी भी किसी विद्यार्थी के काम को लेकर अपने आकलन के बारे में पूरी तरह से आश्वस्त नहीं रहती। मैं इस बात से खूब अच्छी तरह वाकिफ हूँ कि बहुत सम्भव है किसी और ने दूसरी तरह से आकलन किया होगा। मैं विद्यार्थियों के कार्य को हाथ में लेकर दोबारा उसका आकलन करती हूँ और बेहद सुकून महसूस करती हूँ कि मैंने इस बार भी उन्हें वही ग्रेड दिया है। विद्यार्थी स्वयं अपने कार्य का आकलन किस प्रकार करेगा? क्या वह मेरे आकलन के साथ सहमत होगा? ये वे सवाल हैं जो मेरे सामने आते हैं जब मैं सेमेस्टर के अन्त में होने वाले जाँचने के कार्य को धीरे-धीरे और बहुत ध्यान से करती हूँ। मैं समझती हूँ कि यह कार्य प्रत्येक शिक्षक के जीवन का पीड़ादायी पर अपरिहार्य भाग है। मुझे जाम्बवन्त से ईर्ष्या होती है क्योंकि अपनी मन की आँख से मैं उन्हें वीर वानरों को अपनी-अपनी वैयक्तिक क्षमताओं का आकलन करते वक्त दयालु दृष्टि से निहारते देखती हूँ। फिर मैं उन्हें धीरज के साथ हनुमान को उनकी असीम क्षमताओं का सही-सही और

शक्तिदायी आकलन करने में मदद करते देखती हूँ। और इसका परिणाम कितना आनन्ददायी था! सभी वानरों ने उस समय खूब जय-जयकार की, जब हनुमान ने छलाँग लगाकर समुद्र को पार किया।

फिर भी मैं कक्षा में उन तनावों से वाकिफ हुई जो आकलन के कारण पैदा होते हैं भले ही उसका उद्देश्य विद्यार्थियों को वर्गीकृत करना न हो। जब विद्यार्थियों को निचला ग्रेड मिलता है तो वे शिक्षक के प्रति तो आशंकित होते ही हैं, ज्यादा खराब बात है कि खुद की क्षमताओं के प्रति भी आशंकित हो जाते हैं। तब मुझे विद्यार्थियों से ऐसा कहने का मन करता है और कभी-कभी कहती भी हूँ कि, "यह तो सिर्फ एक छोटा सा निबन्ध/कार्य/परीक्षा है, यह किसी और चीज पर टिप्पणी नहीं है। भाड़ में जाए यह ग्रेड, तुम तो हमारे लिए हमेशा की तरह अनमोल, महत्त्वपूर्ण और अद्भुत व्यक्ति हो!" ग्रेड्स से विद्यार्थियों के बीच भी तनाव पैदा होता है और फिर मुझे यह कहने की इच्छा होती है, "सुनो, सीखने का उद्देश्य ग्रेड्स हासिल करने से कहीं ज्यादा बड़ा होता है। निश्चित रूप से तुम लोग एक-दूसरे से प्रतिस्पर्धा करने के बजाय आपस में सहयोग करने से ज्यादा सीख सकते हो।" कभी-कभी मुझे लगता है कि विद्यार्थी इस बात को समझते हैं और कभी मुझे लगता है कि उनका पूरा ध्यान अच्छे ग्रेड्स हासिल करने पर ही लगा रहता है जिससे सीखने का मजा किरकिरा हो जाता है।

जाम्बवन्त ने जो किया और हम शिक्षक अक्सर जो करते हैं उसके बीच एक और अन्तर है जो मेरे दिमाग में आ रहा है। जाम्बवन्त ने प्रदर्शन का आकलन नहीं किया था - इसके लिए कोई कूदने की परीक्षा नहीं हुई थी। इसके बजाय उन्होंने अपने अवलोकनों और वीर वानरों के साथ हुए वार्तालापों के आधार पर योग्यता का आकलन किया। जब समय आया तो उन्होंने अपने आकलन का इस्तेमाल वानरों को समर्थ और सबल बनाने के लिए किया न कि उन्हें हतोत्साहित करने या निराश करने के लिए।

बासिल बर्नस्टीन, जो शिक्षा से जुड़े सबसे सशक्त सिद्धान्तकारों में से एक हैं, ने शिक्षण पर उनके विचारों में 'प्रदर्शन-आधारित' और 'योग्यता-आधारित' आदर्शों के बीच के अन्तर को दर्शाया। प्रदर्शन-आधारित आदर्श में ध्यान विषयों और कौशलों की विशेषज्ञता हासिल करने पर होता है और सीखने को चयन, अनुक्रम और गति के आधार पर तैयार किया जाता है। विद्यार्थी के प्रदर्शन को ग्रेड दिया जाता है, उसका स्तर निर्धारित किया जाता है और मूल्यांकन उत्पाद-आधारित होता है जिसमें जोर इस बात पर होता है कि उत्पाद में क्या चीज नहीं है। योग्यता-आधारित आदर्श के अन्तर्गत होने वाले शिक्षण में जोर विद्यार्थी पर ज्यादा होता है, जिसमें उसकी मौजूदा योग्यताओं और पिछले अनुभव पर ध्यान दिया जाता है और सीखना प्रॉजेक्टों, अनेक तरह के अनुभवों और अनुभवों को बाँटने के माध्यम से की जाने वाली पड़ताल पर आधारित होता है। मूल्यांकन प्रक्रिया-आधारित होता है, जिसमें जोर विद्यार्थी की प्रगति पर होता है।

जैसा कि पहले ही बताया है शोध से मिले प्रमाण हमें प्रदर्शन-आधारित आदर्श के साथ जुड़ी ग्रेडिंग और आकलन परम्पराओं से विमुख करते हैं। भारतीय सन्दर्भ में, एनसीएफ 2005 प्रदर्शन-आधारित आदर्श से योग्यता-आधारित आदर्श की ओर जाने की वकालत करता है और ऐसी ही बात शिक्षा का अधिकार कानून में कही गई है जो बाल केन्द्रित शिक्षण की बात करता है। ऐसे आदर्श में अनिवार्य रूप से भिन्न आकलन प्रक्रियाओं की तथा शिक्षकों और संस्थाओं के लिए कहीं अधिक स्वायत्तता की जरूरत होगी।

अंकों या अक्षरों के माध्यम से ग्रेड्स देकर प्रदर्शन का आकलन न करने का तात्पर्य यह नहीं है कि शिक्षक विद्यार्थियों की क्षमताओं और योग्यताओं के बारे में जानकारियाँ इकट्ठा करना और उन्हें विद्यार्थियों के साथ बाँटना बन्द कर दें। इसके बजाय, आकलन के अधिक सार्थक और रचनात्मक रूप सामने आते हैं। इनमें विवरण (लिखित टिप्पणियाँ), पोर्टफोलिओ (विद्यार्थियों की रुचियाँ, उपलब्धियाँ और समय के साथ उनमें आए सुधार को दर्शाने वाले विद्यार्थियों के लेखन और प्रॉजेक्टों के ध्यानपूर्वक किए गए संग्रह), विद्यार्थियों के नेतृत्व

में पालक-शिक्षक सम्मेलन, प्रदर्शनियाँ और विद्यार्थियों द्वारा अपने कौशल और प्रतिभा का प्रदर्शन करने के दूसरे मौके। अगर मुझे अपनी दादी के द्वारा सुनाई गई रामायण की कहानी ठीक से याद है तो उन्होंने हमें यह बताया था कि जाम्बवन्त ने हनुमान को उनके पुराने जोखिम भरे कार्यों और कारनामों की याद दिलाई थी और इस प्रकार वे हनुमान की योग्यता का ऐसा प्रामाणिक आकलन प्रस्तुत करने में कामयाब हुए थे जिससे हनुमान का आत्मविश्वास बुलन्दियों पर पहुँच गया था।

क्या मैं इस कहानी का इस्तेमाल यह निष्कर्ष निकालने के लिए कर रही हूँ कि हमें कुछ प्राचीन, पौराणिक प्रथाओं की ओर वापस जाना चाहिए? मैं भरोसा दिलाती हूँ कि मैं ऐसी किसी चीज की तरफदारी नहीं कर रही हूँ – यह कहानी ऐसी सुलभ खूँटी का काम करती है जिस पर हम शिक्षा और आकलन के बारे में कुछ महत्त्वपूर्ण विचारों को टाँग सकते हैं। कहानियों में लाभप्रद उपमाओं के रूप में काम करने की अद्‌भुत क्षमता होती है, पर यह किसी अन्य समय पर लिखे जाने वाले किसी अन्य लेख का विषय है!

इन्दिरा *अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय,बंगलौर में पढ़ाती हैं। वे 'पूर्णा' की संस्थापक हैं, जो समग्र शिक्षा के लिए बनाया गया एक सर्वसमावेशी स्कूल है, और वे अभी भी इस स्कूल के साथ सक्रिय रूप से जुड़ी हुई हैं। उनसे indira@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है।* ***अनुवाद*** *: भरत त्रिपाठी*